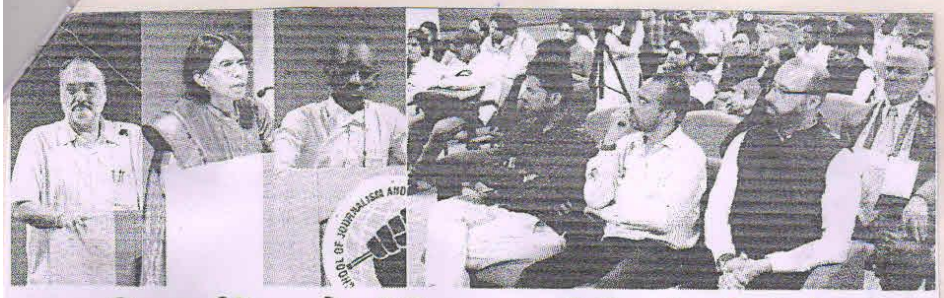

हर व्यक्ति जर्नलिस्ट है, लेकिन अपनी जिम्मेदारियों से वंचित

देअविवि की जनसंचार अध्ययनशाला में अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में कहा डिप्टी डायरेक्टर डॉ. सिंह ने

इंदौर ● स्वदेश समाचार

दुनिया का हर व्यक्ति जर्नलिस्ट है, लेकिन अपनी जिम्मेदारियों से है वंचित, सोशल मीडिया के इस दौर में आज हर व्यक्ति पत्रकार जो अपने निजी स्वार्थ में सूचनाओं को सम्प्रेषित करता है। जहां उसे पता ही नहीं होता कि, वह किस प्रकार की सूचनाओं का आदान-प्रदान कर रहा है कि उसका प्रभाव हमारे समाज पर क्या पड़ रहा है, जहां एक ओर हम मीडिया के द्वारा परंपराओं का संरक्षण करने की बात करते हैं, वहीं आज दिनभर में एक न्यूज बड़ी मुश्किल से ऐसी होती है, जो हमारे और हमारे समाज पर असर कर जाती है, तो यह किस प्रकार का डिजिटल मीडिया प्रचलन में है।

यह बात गुरुवार को मुख्य अतिथि डॉ. पुष्पेंद्रपाल सिंह ने अपने संबोधन में कही। अवसर था पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला (देवी अहिल्या विश्वविद्यालय) द्वारा आयोजित एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का, जिसमें मध्यप्रदेश शासन के माध्यम (जनसंपर्क विभाग) के डिप्टी डायरेक्टर डॉ. सिंह नें अपनी उपस्थिति देते हुए कहा कि, कभी-कभी ऐसा लगता हैं कि, मीडिया समाज के साथ चल रहा है तो कभी मीडिया नया समाज बनाने का प्रयास कर रहा है, जिससे एक प्रकार की टकराव की स्थिति निर्मित करता है। (शेष पृष्ठ 4 पर)

स्वदेश
२९|11|2019

विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत में जहां कई शासकों ने शासन किया उसके बावजूद भी हमारी संस्कृति की जड़ें इतनी मजबूत हैं कि जिसे कोई काट नहीं सका। भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में जहां नागरिकों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्राप्त है, वहीं मीडिया द्वारा नासमझी में भी गलत सूचनाओं को दिया जाता है, जिसका परिणाम समाज में स्थिर विचारों से मिलता है। जो हमें 5 से 10 साल पीछे ले जाता है। जहां पहले मीडिया का काम सूचना देना, शिक्षित करना और अपडेट रखना था, वहीं वर्तमान में मीडिया का परिदृश्य सिर्फ सूचना का आदान-प्रदान करना है।

इस संगोष्ठी का शुभारंभ मां सरस्वती के पूजन एवं दीप प्रज्ज्वलन द्वारा किया गया। विभागाध्यक्ष डॉ. सोनाली नरगुंदे ने अतिथियों का स्वागत सूत की माला से किया। डॉ. नरगुंदे द्वारा अतिथि उद्बोधन के साथ अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी की विषय वस्तु व विदेशी राष्ट्रों से पधारे अतिथियों का परिचय कराया गया। आपने संगोष्ठी में भाग ले रहे सभी शोधार्थियों को इस संगोष्ठी के माध्यम से मीडिया जगत को नया आयाम प्रदान करने हेतु शुभकामनाएं दी। इस संगोष्ठी में विकसित राष्ट्रों के विषय विशेषज्ञों ने मीडिया एंड सोसायटी इन डेवलपिंग नेशन विषय पर अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किए। इस संगोष्ठी में भाग लेने के लिए अतिथि के रूप में डॉ. फिरास सईद (सीरिया), लीन लिसा (सीरिया), हनन अहमद अली-अल-जरमुजी (यमन), अला हा-अल-अल्हमा (फिलिस्तीन), जोसवा बोइट (केन्या) तथा मिस्टर सोरी मेंमैंडी कॉरमा (घाना) मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

संगोष्ठी के उद्घाटन अतिथि के रूप में विचारक जयंत भिसे सहित रेनेसाँ यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. राजेश दीक्षित, सीरिया से डॉ. फिराज सैय्यद व डॉ.

माध्यम और समाज के बीच का अंतर समझना होगा। जहां पाश्चात्य संस्कृति में अंतिम इकाई व्यक्ति है, वहीं भारतीय संस्कृति में अंतिम इकाई परिवार है। हमें पद पर रहते हुए जिम्मेदारियों का पालन करना चाहिए, जहां मीडिया अपना काम कर रहा है वहीं समाज अपना काम कर रहा है, यह समाज पर छोड़ दें कि क्या गलत है, और क्या सही ? हमें समाज की तासीर को समझते हुए

संदेश का, सूचनाओं का प्रवाह करना चाहिए। डॉ. दीक्षित ने कहा कि, 21वीं सदी में डिजिटल मीडिया के साथ होकर भी हम आज उस दौर में जी रहे हैं, जहां पर जानकारियां फायर पान की तरह परोसी जा रही हैं, जो दिखने में बड़ी और ज्वलंत हैं। आपने मीडिया और पत्रकार को बदलते समाज का आईना कहा। अपनी बात रखने से पहले आपको यह सोचना होगा कि, इसका परिणाम क्या है ?

इस संगोष्ठी का संचालन दो तकनीकी सत्रों में किया गया। पहले तकनीकी सत्र में डॉ. संजीव गुप्ता (विभागाध्यक्ष-पत्रकारिता विभाग, माखनलाल चतुर्वेदी विश्वविद्यालय, भोपाल), डॉ. मीनू कुमार (पत्रकारिता विभाग, देअविवि) एवं दूसरे सत्र में सीरिया से आई विशेषज्ञ डॉ. फिरास सईद व डॉ. अनुराधा शर्मा द्वारा प्रस्तुत शोध-पत्रों की समीक्षा की गई। शोधार्थी डॉ. फिराज सैय्यद व उनके बाद व लीन लिसा ने अपने शोध पत्र से बताया कि सीरिया में किस तरह की परेशानियां हैं। चाहे वह राजनीतिक मतभेद, कुपोषण हो या कल्चर। और मीडिया इन बदलते हालात में किस तरह वहां रोल प्ले कर रहा है।

अध्ययनशाला के शोधार्थी सौरभ मिश्राम ने अपने शोध-पत्र में बताया कि, एम्पावरमेंट पर जिस तरह से आजकल फिल्में बनाई जा रही हैं, वो भारत में

जरमुजी ने अपने रिसर्च पेपर के माध्यम से यमन की परंपरा, खेल और भोजन के बारे में बताया।

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र में चिंतक-विचारक चिन्मय मिश्र व देअविवि की कुलपति डॉ. रेणु जैन अतिथि के रूप में उपस्थित रहें। कुलपति ने सभी शोधकर्ताओं व श्रोताओं को संबोधित करते हुए कहा कि, हमारे पास दो ही हथियार हैं, एक तलवार तो दूसरी कलम। और हमेशा अंत में कलम ही तलवार को मात देती है। आपने विदेशी अतिथियों व शोधकर्ताओं को शुभकामनाएं देते हुए विभाग को अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए बधाई दी। अतिथि चिन्मय मिश्र ने संबोधित करते हुए कहा कि, वर्तमान परिपेक्ष्य में मीडिया के मापदंड दोहरे होते प्रतीत होते हैं। आपने अपने वक्तव्य में बदलते समाज के समीकरण को दर्शाते हुए समाज में बढ़ रही प्रतिस्पर्धा को समझाया।

समापन सत्र में श्री मिश्र, कुलपति डॉ. जैन व विभागाध्यक्ष डॉ. नरगुंदे द्वारा संगोष्ठी में शोध-पत्र प्रस्तुतकर्ता शोधार्थियों व वालेंटियर्स को प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया गया। संचालन डॉ. कामना लाड़, ऐश्वर्या इंगले व दिव्या हूरकट ने किया। डॉ. नरगुंदे ने संगोष्ठी का सार समापन सत्र के अतिथियों को बताया व सभी का आभार माना।

पूरक के विद्यार्थियों की प्रायोगिक परीक्षा के अंक 10 दिसं. तक भेजना अनिवार्य

इंदौर ● देअविवि द्वारा इंदौर, धार, झाबुआ, खंडवा, खरगोन, बड़वानी, बुरहानपुर और आलीराजपुर जिलों में संबंधित कॉलेजों के प्रधानाचार्यों को निर्देशित किया गया है कि वर्ष 2018-19 की स्नातक स्तर में पहले एवं दूसरे वर्ष की पूरक के विद्यार्थियों की प्रायोगिक-सीसीए-प्रोजेक्ट परीक्षा को लेकर दिए गए निर्देशों का अनिवार्यत: पालन करें। इसके अंतर्गत 10 दिसंबर तक एमपी ऑनलाइन के माध्यम से प्रायोगिक के अंक भेजे जाना जरुरी हैं। इसके बाद अंक भेजने पर लापरवाही मानी जाएगी।